6 नृपति दिलीपः

वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्।
आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव।।१।।

तदन्वये शुद्धिमतिः प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।
दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव।।२।।

भीमकान्तैर्नृपगुणैः स बभूवोपजीविनाम्।
अधृष्यश्चाभिगम्यश्च यादोरत्नैरिवार्णवः।।३।।

रेखामात्रमपि क्षुण्णादामनोर्वत्मनः परम्।
न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः।।४।।

आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।
आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः।।५।।

प्रजानामेव भृत्यर्थं स ताभ्यो बलिमगृहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।।६।।

सेनापरिच्छदस्तस्य द्वयमेवार्थसाधनम्।
शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिर्मौर्वी धनुषि चाततता।।७।।

तस्य संवृतमन्त्रस्य गूढ़ाकारेङ्गितस्य च।
फलानुमेया प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव।।८।।

जुगोपात्मानमत्रस्तो भेजे धर्ममनातुरः।
अगृध्नुराददे सोऽर्थमसक्तः सुखमन्वभूत्।।९।।

ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव।।१०।।

अनाकृष्टस्य विषयैर्विद्यानां पारदृश्वनः।
तस्य धर्मरतेरासीद् वृद्धत्वं जरसा बिना।।११।।

प्रजानां विनयाधानाद् रक्षणाद् भरणादपि।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः।।१२।।

दुदोह गां स यज्ञाय, शस्याय मघवा दिवम्।
संपद्विनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयम्।।१३।।

द्वेष्योऽपि सम्मतः शिष्टस्तस्यार्तस्य यथौषधम्।
त्याज्यो दुष्टः प्रियोप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षता ।।१४।।

स वेलावप्रवलयां परिखीकृत-सागराम्।
अनन्यशासनामुर्वीं शशासैकपुरीमिव।।१५।।

(रघुवंश)

अभ्यास प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

१. वैवस्वतः मनुः कः आसीत्? **[2017 ML, 20 ZB, ZE, ZG]**
२. दिलीपः कस्य प्रदेशस्य राजा आसीत्? **[2020 ZD]**
३. दिलीपः कस्यान्वये प्रसूतः?
४. दिलीपः किमर्थम् बलिमगृहीत्? **[2016 SH, SI]**
५. रविः जलं किमर्थम् आदत्ते?
६. महीक्षिताम् आद्यः कः आसीत्?
७. दिलीपस्य के गुणाः सन्ति? **[2017 MK]**
८. मनीषिणां माननीयः कः आसीत्?

अनुवादात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी-अनुवाद कीजिए–

(क) वैवस्वतो ..... क्षीरनिधाविव।
(ख) आकारसदृशप्रज्ञः ..... आरम्भसदृशोदयः।
(ग) प्रजानामेव ..... रविः। **[2016 SM]**
(घ) दुदोह गां ..... दधतुर्भुवनद्वयम्।
(ङ) द्वेष्योऽपि ..... पुरीमिव।
(च) सेनापरिच्छदस्तस्य ..... चातता।
(छ) ज्ञाने मौनं ..... जरसा बिना।
(ज) प्रजानां ..... जन्महेतवः।
(झ) रेखामात्रमपि ..... वृत्तयः।
(ञ) अनाकृष्टस्य ..... बिना। **[2017 MM, 20 ZF]**
(ट) तदन्वये ..... क्षीरनिधाविव। **[2019 AL]**

२. निम्नलिखित सूक्तिपरक पंक्तियों की ससन्दर्भ हिन्दी-व्याख्या कीजिए–

(क) राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव।
(ख) वृद्धत्वं जरसा बिना।

(ग) त्याज्यो दुष्टः प्रियोप्यासीत्।
(घ) प्रजानामेव भृत्यर्थं स ताभ्यो बलिमगृहीत्।
(ङ) त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
(च) सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।
(छ) ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।

३. **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–**
(क) दिलीप अयोध्या के राजा थे।
(ख) वे पुत्र की भाँति प्रजा का पालन करते थे।
(ग) वे सज्जनों का आदर करते थे।
(घ) वे धर्म का विधिवत् पालन करते थे।

व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–**
क्षीरनिधाविव,शशासैकपुरीम, अङ्गुलीव, तस्यार्तस्य।

२. **निम्नलिखित शब्दों में शब्द, विभक्ति एवं वचन बताइए–**
प्रज्ञया, नियन्तुः, आगमैः, शक्तौ, रक्षणाद्।

शब्दार्थ

आद्यः = प्रथम। **प्रणवः** = ओऽम् (ॐ)। **उपजीविनाम्** = आश्रितों के। **अधृष्यः** = अनतिक्रमणीय। **यादोरत्नै** = भयङ्कर जलजन्तु तथा रत्नों से। **आकारसदृशप्रज्ञः** = आकृति के अनुरूप बुद्धिवाले। **आरम्भसदृशोदयः** = (आरम्भसदृश + उदयः) प्रारम्भ किये गये कार्यों के अनुरूप फल । **बलिम्** =कर, टैक्स। **भूत्यर्थम्** = (भूति + अर्थम्) कल्याण के लिए। **उत्स्रष्टुमादत्ते** = (उत्स्रष्टुम + आदत्ते) देने या बरसाने के लिए ग्रहण करता है। **परिच्छदस्तस्यर**= (परिच्छदः + तस्य) उसका उपकरण थी। **अकुण्ठिता** = पैनी। **मौर्वी** = प्रत्यंचा। **चातता** = (चि + आतता) और चढ़ी हुई; तनी हुई। **संवृतमन्त्रस्य** = गुप्त मन्त्रणावाले। **गूढ़ाकारेङ्गितस्यर**= (गूढ़ + आकार + इङ्गितस्य) गुप्त आकार और संकेतवाले। **प्रारम्भाः** = कार्यों का आरम्भ। **प्राक्तनाः** = पूर्वजन्म के। **वलिं** = कर। **नेमि** = धुरी। **अगृध्नु** = बिना लालच के। **सप्रसवा** = साथ उत्पन्न हुए। **पारदृश्वनः (षष्ठी)** = पारंगत।